बलबीर सिंह वर्मा 'वागीश'

जन्मतिथि- 20 .01.1982
जन्मस्थान - रिसालिया खेड़ा, जिला- सिरसा (हरियाणा)
पिता का नाम- श्री ओमप्रकाश
माता का नाम- श्रीमति रोशनी देवी
मोबाइल नम्बर - 9416788279

जीवन में रखना सदा, अपना हृदय उदार।
बाँध गाँठ मन में यही, जीवन का आधार।।
जीवन का आधार, एक दिन सबको जाना।
खोल द्वेष की गाँठ, नहीं इसको उलझाना।।
उलझे जाती टूट, हुई कब इसकी सीवन।
बाँध प्रीति की गाँठ, मिला हमको ये जीवन।।

****

धरती के प्राणी सभी, ईश्वर की संतान।
एक - दूसरे का सदा, करें सभी सम्मान।।
करें सभी सम्मान, नेह भी सबसे करना।
भेदभाव को त्याग, कष्ट सब मिलकर हरना।।
बन अच्छी संतान, गर्व तब दुनिया करती।
नहीं पता कब कौन, छोड़कर जाता धरती।।

****

चाहत सबकी हो यही, बाँटें सबसे प्यार।
राग-द्वेष सब भूलकर, दूर करें तकरार।।
दूर करें तकरार, सदा ही मिलकर रहना।
दुःख-दर्द को बाँट, प्रेम का पहनें गहना।।
अपने से 'वागीश', नहीं हो कोई आहत।
ऐसा हो व्यवहार, यही अब सबकी चाहत।।

****

सारे जीवों में रहा, सदा श्रेष्ठ इंसान।
फिर भी देखो कर रहा, काम बड़ें नादान।।
काम बड़े नादान, बनाया दिल को पत्थर।
ईश्वर भी हैरान, वक्त का कैसा मंजर।।
देख रहा 'वागीश', कर्म भी काले न्यारे।
हुई बुद्धि क्यों भ्रष्ट, जीव ये सोचे सारे।।

****

आएँ संकट जब कभी, करें धैर्य से काम।
निकलेगा हल भी यहाँ, सुबह नहीं तो शाम।।
सुबह नहीं तो शाम, मिटेंगे दुख ये सारे।
डूबे उनकी नाव, सदा जो मन से हारे।।
कहता कवि 'वागीश', न जीवन में घबराएँ।
कभी दुःख की रात, कभी सुख के दिन आएँ।।

****

जीवन में देखो कभी, होना नहीं उदास।
होठों पर मुस्कान हो, मुख पर रहे उजास।।
मुख पर रहे उजास, यही है राज बताना।
हँसकर अपने क्लेश, हमें ही दूर भगाना।।
कहता कवि 'वागीश', चमन-सा महके जो मन।
रहे उदासी दूर, सँवरता उसका जीवन।।

****

हरियाली बिखरी हुई, सावन भरे बहार।
धरती सुन्दर सी सजी, कर सोलह श्रृंगार।।
कर सोलह श्रृंगार, लगे यह अति मन भावन।
झूम रही हर डाल, बरसता रिमझिम सावन।।
देख धरा 'वागीश', दिखे कितनी मतवाली।
धरती का श्रृंगार, सदा होती हरियाली।।

****

पायल पैरों में बजे, सजे गले में हार।
रंग - बिरंगी चूड़ियाँ, नारी का श्रृंगार।।
नारी का श्रृंगार, देखकर हर्षित होती।
हिना रचाए हाथ, गले में माला मोती।।
सौम्य सजीला रूप, हृदय को करता घायल।
झूमे मन झंकार, बजे जब देखो पायल।।

****

जैसा अपना काम है, वैसा ही परिणाम।
अच्छे से अच्छा मिले, जग में होता नाम।।
जग में होता नाम, बुरे से मिले बुराई।
कर्मों का परिणाम, मिले यह बात बताई।।
जो बोया है आज, मिलेगा फल भी वैसा।
अच्छा हो परिणाम, कर्म भी हो उस जैसा।।

****

कविता लिखना हो अगर, या लिखना हो गीत।
पालन करें विधान का, सृजन उचित वह मीत।।
सृजन उचित वह मीत, गज़ल भी चाहे कहना।
सजल लिखे या छंद, नियम में सबको रहना।।
कहता कवि 'वागीश', बहे तब रस की सरिता।
विधि-विधान के साथ, सजे कविवर की कविता।।

****